रात्रि क्लास 5-12-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

जब बेहद का बाप मिल जाता है तो समझना चाहिए बेहद की बादशाही उनसे मिलने की है। बाप जब बेहद की बादशाही देते हैं। अभी दे नहीं सकते हैं वास्तव में। तुम श्रीमत से पा सकते हो। देने की चीज़ नहीं। पढ़ाई में बाप डायरेक्शन देते हैं एक तो पावन बनना है। ऐसे नहीं कैसे बाबा याद करें। बच्चे यह पूछ नहीं सकते। बच्चे तो बाप को आटोमेटकली याद करते हैं। स्वतः जानते हैं बाप पावन है। बाप को जान लिया। अच्छा पतितसे पावन कैसे बनाते हैं यह भी समझ की बात है ना। फिर बाप डायरेक्शन देते हैं तुम पावन सतोप्रधान थे। फिर तमोप्रधान बने हो। फिर सतोप्रधान बनना है। यह सिर्फ बाप नहीं, टीचर भी है। बाप रास्ता बताते हैं ऐसे पावन बन सकते हो। मुश्किलात पावन बनने की है। मेहनत भी इसमें है। पावन बनने ही बाप को याद करना पड़ता है। तो फिर पतित नहीं बनना चाहिए। कहते हैं पावन बनें परन्तु माया बनने न देती। गिरा देती है। बच्चियां कुछ सपुत होती हैं, बच्चे कपुत होते हैं। कुमारी लज्जायमान होती है। कुमार निर्लज्ज होते हैं। बनावट ही ऐसी है। पुकारती भी स्त्री है। ऐसे कब नहीं सुना होगा पुरुष पुकारे कि स्त्री हमको नंगन करती है। नहीं। तो भूल बात पवित्रता की होती है। सवाल ही बाप यह पूछते हैं कब नंगन तो नहीं हुई हो। बच्चे बताते हैं हुये हैं वा नहीं। बाप समझाते हैं युगल बनते हैं तो नंगन होते ही हैं। शादी नंगन होने लिये ही करतेहैं। रावण राज्य में नंगन होने की ड्रामा में नूंध है। फिर बाप कहते हैं नंगन नहीं होना है। मेरे राज्य में कब नंगन नहीं होते। और कोई भी ऐसे कह न सके। मेरे राज्य में ... राज्य तो कोई का है नहीं। वैश्य और शुद्र सम्प्रदाय का धर्म है नंगन होना। विकारी होने से पाप जरूर होता है। बच्चे सबसे रेसपान्ड कर सकते हैं। बाबा हम पावनबनेंगे। बाबा सतयुग में हम नंगन नहींहोते थे। भारतवासी स्वर्ग को 40हजार वर्ष दूर ले गये हैं। बाप स्वर्ग को बहुत नजदीक ले आते हैं। बाप कहते हैं नई दुनिया धो तो फिर जरूर होंगे। आठ वर्ष में नईदुनिया होनी है। तो कितना बड़ा फर्क पड़ जाता है। बाप ही बताते हैं कल्प की आयु 5000वर्ष सत्यहै। तुम समझाते हो तो मनुष्य कहते शास्त्रों में तो इतने वर्ष हैं। बोलो भगवान हमको यह समझाते हैं। मनुष्य शास्त्र बताते हैं। यहां भगवान समझाते हैं। कितना फर्क है। बाप कहते हैं शास्त्रसम्मत मैं हूं। शक्ति की [illegible] हुआ? बच्चे समझते हैं मनुष्य बिल्कुल ही घोर अंधियारे में हैं। तुम आठ वर्ष कहते हो तो मनुष्य समझते यह गपोड़ा है। कोई से भी पूछो तो कहेंगे कल्प की आयु 40हजार वर्ष है। अभी तो छोटा है। बाप कहते हैं बहुत2 पुराना है। तुम बच्चे भी पुराने तो तुम्हारा पार्ट भी पुराना है। इतनी छोटी आत्मा में 84 जन्मों का पार्ट भरा हुआ है। वन्डर है ना। ऐसे2 महीन गुह्य बातें बच्चों को भूल जाती है। कहते भी हैं आत्मा सितारे मिसल है। भृकुटि के बीच रहती है। बहुत छोटी है। परन्तु भक्तिके लिये बड़ा रूप बनाया है। आत्मा कब घिसती बढ़ती नहीं है। देवताओं की पूजा होती है तो बाप की भी पूजा होनी चाहिए। मैं तुमको पावन बनाता हूं। तुम पहले2 मेरी भक्ति करते हो। तुम्हारे बुद्धि में है नम्बरवन भक्त हम बनते हैं। पास्ट बच्चों को याद आता है। अपना घर भी आत्मा को याद आता है। बाप और आत्मायें निर्वाणधाम में रहती हैं। वहां से तुम पार्ट बजाने आते हो। स्वर्गधाम में। समझाया जाता है स्वर्ग से नर्क नर्क से स्वर्ग कैसे होता है। बीच में संगम पर बाप आते हैं। जो कुछ नहीं जानते उनको तुच्छ बुद्धि कहा जाता है। बाप कहते हैं तुम ही बहुत जन्मों के अंत में तुम मुझे मिलते हो। पहचानते हो। बाप है सुप्रीम फादर सुप्रीम टीचर। ऊंच ते ऊंच। तो यह 84 के चक्र का नालेज है। तुम जानते हो बराबर सतयुग में इनका राज्य था। हम अभी वही बन रहे हैं। दिल में जंचता भी है। परन्तु माया फिर भी भूला देती है। बाप कहते हैं जैसे मैं सर्वशक्तिवान हूं वैसे रावण भी है। शिव की जीत भी भारत में रावण की जीत भी भारत में होती है। जो अपनी पूजा कराते हैं उनको हिरण्यकशिपु कहा जाता है। नरसिंग की अर्जी लगाते हैं ना। फिर वह आसी(आग) मजबूरी के साथ में आना है। पुनरान पर कितनी बली आदि आते हैं। फिर सभी बेच देते हैं। सिन्ध में यह सब बहुत हैं। क्योंकि बाप भी सिन्ध में आते हैं। मगध देश में आते हैं। गुप्त टीचर तो पढ़ने वाले भी गुप्त हैं। आत्मा भी गुप्त है ना। अच्छा बच्चों को गुडनाईट और नमस्ते।